Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

Original Article

विकास खण्ड नरायनपुर (जनपद मिर्ज़ापुर) में ग्रामीण विकास पर कृषि पद्धतियों का प्रभाव : एक भू-स्थानिक दृष्टिकोण

आकांक्षा

शोध छात्रा,भूगोल विभाग, काशी नरेश राजकीय स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुर, भदोही,उ.प्र.
Email: ravichailuster@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-170817
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 8(B)|
Pp. 103-109
Aug 2025
Submitted: 13 July. 2025
Revised: 28 July. 2025
Accepted: 13 Aug. 2025
Published: 31 Aug. 2025

सार

यह अध्ययन ब्लॉक नारायणपुर, जिला मिर्जापुर में कृषि प्रथाओं के ग्रामीण विकास पर प्रभाव की जांच करता है, जिसमें सर्वेक्षण–आधारित डेटा विश्लेषण का उपयोग किया गया है। यह विभिन्न कृषि विधियों, भूमि उपयोग पैटर्न, सिंचाई प्रणालियों और फसल उत्पादन प्रथाओं के आर्थिक विकास, रोजगार के अवसरों और ग्रामीण समुदायों की सामान्य भलाई पर योगदान की जांच करता है। इस क्षेत्र में मौजूदा कृषि प्रथाओं की प्रभावशीलता और स्थिरता का आकलन करने के लिए 300 उत्तरदाताओं, जिनमें किसान और कृषि श्रमिक शामिल हैं, का सर्वेक्षण किया गया। यह शोध कृषि उत्पादकता को बढ़ाने वाले प्रमुख तत्वों और उनके ग्रामीण आजीविका पर प्रभाव की पहचान करने का प्रयास करता है। यह किसानों और श्रमिकों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों, जैसे संसाधनों, प्रौद्योगिकी और प्रशिक्षण तक पहुँच, को भी समझने का प्रयास करता है। इन तत्वों का विश्लेषण करके, अध्ययन यह दर्शाता है कि कृषि रणनीतियाँ ग्रामीण विकास, आर्थिक स्थिरता और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने में कैसे सहायक हो सकती हैं। परिणामस्वरूप, यह निष्कर्ष नीति निर्माताओं और हितधारकों को प्रभावी नीतियाँ और हस्तक्षेप डिजाइन करने के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करने का लक्ष्य रखते हैं, जो कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देने और क्षेत्र में स्थिर ग्रामीण विकास को प्रोत्साहित कर सकें। कुल मिलाकर, यह शोध ग्रामीण विकास और कृषि के दीर्घकालिक सामाजिक–आर्थिक प्रगति में योगदान की महत्ता पर व्यापक चर्चा में योगदान करने का प्रयास करता है।

कीवर्ड: *कृषि प्रथाएँ, ग्रामीण विकास, आर्थिक विकास, रोजगार के अवसर*

परिचय

कृषि को लंबे समय से ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं की रीढ़ माना जाता है, जो जीवनयापन का मुख्य स्रोत प्रदान करती है, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है, और ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक स्थिरता में महत्वपूर्ण योगदान देती है। कई विकासशील क्षेत्रों में, कृषि न केवल स्थानीय जनसंख्या की जीविका का समर्थन करती है, बल्कि व्यापक सामाजिक–आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मिर्जापुर जिले में स्थित ब्लॉक नारायणपुर का ग्रामीण परिदृश्य एक विविध कृषि पर्यावरण प्रदान करता है, जिसमें विभिन्न प्रकार की फसलें, मवेशी और पारंपरिक कृषि प्रथाएँ शामिल हैं। हालांकि, इसके कृषि संभावनाओं के बावजूद, इस क्षेत्र को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो इसके विकास और समग्र ग्रामीण विकास में रुकावट डालती हैं। इन चुनौतियों में भूमि का अपरदन, अव्यवस्थित सिंचाई प्रणालियाँ, आधुनिक कृषि तकनीकों तक सीमित पहुँच, और खराब बाजार कनेक्टिविटी शामिल हैं, जो उत्पादकता और स्थानीय जनसंख्या की जीविका पर प्रभाव डालते हैं। भूमि का अपरदन, जो मुख्य रूप से अत्यधिक खेती, वनों की कटाई, और रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग के कारण होता है, ने मिट्टी की उर्वरता में कमी की है, जिससे फसल उपज प्रभावित हो रही है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
आकांक्षा,शोध छात्रा, भूगोल विभाग, काशी नरेश राजकीय स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुर, भदोही, उ.प्र.

How to cite this article:
आकांक्षा. 2025).विकास खण्ड नरायनपुर (जनपद मिर्ज़ापुर) में ग्रामीण विकास पर कृषि पद्धतियों का प्रभाव : एक भू-स्थानिक दृष्टिकोण. Journal of Research and Development, 17(8(B)), 103–109.
https://doi.org/10.5281/zenodo.17541064

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17541064
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

क्षेत्र की सिंचाई प्रणालियाँ, जो अक्सर पुरानी और खराब रख–रखाव वाली होती हैं, अव्यवस्थित हैं, जिसके परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण उगाई के मौसम में जल की कमी होती है और कृषि उत्पादकता पर और दबाव पड़ता है। इसके अलावा, नारायणपुर के किसान बाजारों तक सीमित पहुँच के कारण संघर्ष कर रहे हैं, जो अक्सर बिक्री में देरी, फसलों के लिए कम कीमतें, और उपज के बाद नुकसान को बढ़ाता है। ये समस्याएँ क्षेत्र की आर्थिक अस्थिरता में योगदान करती हैं और किसानों और कृषि श्रमिकों के जीवन स्तर पर प्रभाव डालती हैं।

इन चिंताओं को ध्यान में रखते हुए, इस अध्ययन का उद्देश्य ब्लॉक नारायणपुर में कृषि प्रथाओं का विश्लेषण करना और उनका ग्रामीण विकास पर सीधा और अप्रत्यक्ष प्रभाव समझना है। इस शोध में भू–स्थानिक तकनीकों, जैसे कि जीआईएस (भौगोलिक सूचना प्रणाली) मानचित्रण, के साथ–साथ सर्वेक्षण आधारित डेटा संग्रहण पद्धति का संयोजन किया जाएगा, ताकि यह जांचा जा सके कि विभिन्न कृषि विधियाँ, भूमि उपयोग पैटर्न, और फसल प्रणाली आर्थिक विकास, रोजगार और समग्र ग्रामीण कल्याण को कैसे प्रभावित करती हैं। उद्देश्य यह है कि उन स्थायी कृषि प्रथाओं की पहचान की जा सके जो क्षेत्र में सामने आ रही समस्याओं को हल कर सकती हैं और कृषि उत्पादकता और ग्रामीण विकास को सुधारने के लिए सिफारिशें दी जा सकें।

इसके अलावा, अध्ययन का उद्देश्य मौजूदा कृषि प्रथाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना और यह देखना है कि ये प्रथाएँ क्षेत्र की बदलती पर्यावरणीय और आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार कैसे अनुकूलित की जा सकती हैं। इस जांच के माध्यम से, शोध नीति निर्माताओं, कृषि विशेषज्ञों और स्थानीय हितधारकों के लिए मूल्यवान जानकारी प्रदान करेगा, ताकि वे ऐसे प्रभावी रणनीतियाँ तैयार कर सकें जो ब्लॉक नारायणपुर में स्थायी कृषि वृद्धि और ग्रामीण विकास को बढ़ावा दें। अंततः, यह अध्ययन कृषि और ग्रामीण विकास के बीच संबंध को गहरे से समझने में योगदान देने का प्रयास करेगा, ताकि क्षेत्र में दीर्घकालिक आर्थिक और सामाजिक प्रगति को बढ़ावा मिल सके।

ब्लॉक नारायणपुर, जो उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में स्थित है, एक प्रमुख रूप से ग्रामीण परिदृश्य वाला और विविध कृषि अर्थव्यवस्था से संपन्न क्षेत्र है। इस ब्लॉक में बहुत से कृषि परिवार रहते हैं जो अपनी जीविका के लिए कृषि पर निर्भर हैं। क्षेत्र की कृषि गतिविधियाँ विभिन्न प्रकार की फसलों को कवर करती हैं, जिनमें अनाज जैसे गेहूं, चावल, और दालें, साथ ही साथ बागवानी फसलें जैसे सब्जियाँ और फल शामिल हैं। मवेशी पालन, विशेष रूप से गाय और बकरियाँ, भी स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान करती हैं। हालांकि, इस क्षेत्र की कृषि क्षमता के बावजूद, ब्लॉक को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो इसकी उत्पादकता और समग्र विकास को प्रभावित करती हैं। उन्नत कृषि तकनीकों की कमी, सिंचाई की सीमित पहुँच, और भूमि अपरदन की बार–बार समस्या प्रमुख रुकावटें हैं। इसके अतिरिक्त, अवसंरचना समस्याएँ, जैसे खराब सड़क कनेक्टिविटी और अपर्याप्त बाजार पहुंच, स्थानीय किसानों को होने वाली कठिनाइयों को और बढ़ा देती हैं।

नारायणपुर का कृषि परिदृश्य कई प्राकृतिक और मानव निर्मित कारकों से प्रभावित होता है जो उत्पादकता और समुदाय की सामाजिक–आर्थिक भलाई को प्रभावित करते हैं। जबकि उपजाऊ मिट्टी और अनुकूल जलवायु परिस्थितियाँ कृषि के लिए अवसर प्रदान करती हैं, गलत भूमि प्रबंधन, अनियमित वर्षा, और पारंपरिक कृषि विधियों पर अत्यधिक निर्भरता दीर्घकालिक स्थिरता को प्रभावित करती है। ब्लॉक में सामाजिक–आर्थिक असमानताएँ भी हैं, जहां छोटे किसान और कृषि श्रमिक जैसे हाशिए पर रहने वाले वर्ग अधिक प्रभावित होते हैं और वे खराब कृषि प्रथाओं के प्रतिकूल प्रभावों के लिए अधिक संवेदनशील होते हैं।

ग्रामीण विकास पर कृषि पद्धतियों का प्रभाव

कृषि प्रथाएँ एक क्षेत्र के ग्रामीण विकास को सीधे प्रभावित करती हैं, जो आर्थिक स्थिरता, रोजगार, खाद्य सुरक्षा और समग्र भलाई को प्रभावित करती हैं। ब्लॉक नारायणपुर के संदर्भ में, कृषि प्रथाएँ क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कृषि, जो जीविका का प्रमुख स्रोत है, स्थानीय जनसंख्या के लिए आय स्तर, रोजगार के अवसर और संसाधनों की उपलब्धता को निर्धारित करती है।

कृषि प्रथाएँ ग्रामीण विकास को प्रभावित करने का एक प्रमुख तरीका उनके आर्थिक विकास पर प्रभाव डालने के माध्यम से है। पारंपरिक कृषि विधियाँ, जैसे कि एकल फसल उगाना और निम्न–आवश्यकता वाली तकनीकों पर निर्भरता, उच्च कृषि उपज की संभावना को सीमित करती हैं। इसके परिणामस्वरूप किसानों के लिए आय स्तर कम हो जाता है, जो अक्सर उन्हें गरीबी की ओर धकेलता है। इसके विपरीत, आधुनिक और सतत कृषि प्रथाओं को अपनाने जैसे कि फसल चक्र, जैविक कृषि, और प्रभावी सिंचाई तकनीकों का उपयोग उत्पादकता और आय सृजन को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा सकता है। इसके अतिरिक्त, कृषि उत्पादकता में सुधार से अधिशेष उत्पादन उत्पन्न हो सकता है, जिसे स्थानीय और क्षेत्रीय बाजारों में बेचा जा सकता है, जिससे आर्थिक विकास को उत्तेजना मिलती है और जीवन स्तर में वृद्धि होती है। कृषि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ब्लॉक नारायणपुर में, बड़ी संख्या में लोग कृषि श्रमिक के रूप में काम करते हैं, चाहे वे किसान हों या कृषि श्रमिक। हालांकि, पारंपरिक कृषि विधियों की अक्षमता के कारण अपर्याप्त रोजगार के अवसर और कम मजदूरी हो रही है। आधुनिक कृषि तकनीकों, कृषि प्रसंस्करण इकाइयों, और संबंधित गतिविधियों जैसे कि मवेशी पालन, पोल्ट्री और मछली पालन में विविधीकरण के द्वारा नए रोजगार के अवसर पैदा किए जा सकते हैं। इसके अलावा, नई कृषि तकनीकों और मूल्य संवर्धित उत्पादों में प्रशिक्षण और कौशल विकास प्रदान करने से स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाया जा सकता है और रोजगार के अवसरों को बढ़ाया जा सकता है।

भूमि उपयोग के पैटर्न और फसल प्रणाली भी कृषि उत्पादकता और ग्रामीण जनसंख्या की आर्थिक स्थिरता निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। नारायणपुर में, पारंपरिक भूमि उपयोग के पैटर्न और पुराने फसल प्रणालियाँ अक्सर भूमि के अपर्याप्त उपयोग की ओर ले जाती हैं। एकीकृत कृषि प्रणालियों, कृषि वानिकी, और विविधीकृत फसल विधियों को बढ़ावा देकर

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

कृषि उत्पादकता में सुधार किया जा सकता है। ये प्रथाएँ न केवल उपज बढ़ाती हैं, बल्कि जलवायु परिवर्तन और बाजार उतार–चढ़ाव से संबंधित जोखिमों को भी कम करती हैं। इसके अतिरिक्त, सिंचाई सुविधाएँ एक महत्वपूर्ण कारक हैं जो कृषि प्रथाओं की सफलता निर्धारित करती हैं। जिन क्षेत्रों में सिंचाई अवसंरचना सीमित है, वहां सूखा पड़ने पर फसलें विफल हो जाती हैं, जिससे गरीबी का चक्र और बढ़ जाता है। जल प्रबंधन में सुधार, सिंचाई नेटवर्क का विस्तार और जल–बचत तकनीकों जैसे ड्रिप और स्प्रिंकलर सिस्टम को अपनाकर कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि हो सकती है और किसानों के जीवनयापन को स्थिरता मिल सकती है।

इसके अलावा, कृषि प्रथाओं के सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभावों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। असतत कृषि प्रथाएँ, जैसे रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अधिक उपयोग, मिट्टी के अपरदन, जैव विविधता की हानि और पर्यावरण प्रदूषण का कारण बनी हैं। दूसरी ओर, सतत कृषि प्रथाएँ जो मिट्टी संरक्षण, जल प्रबंधन और जैविक कृषि पर केंद्रित हैं, पर्यावरणीय नुकसान को कम कर सकती हैं और दीर्घकालिक कृषि उत्पादकता को बढ़ा सकती हैं।

ग्रामीण जनसंख्या का स्वास्थ्य और पोषण भी कृषि प्रथाओं से गहरे जुड़े होते हैं। उन्नत कृषि तकनीकियाँ और विविधीकृत फसलें बेहतर पोषण, खाद्य सुरक्षा और समग्र भलाई की ओर ले जाती हैं। बढ़ी हुई कृषि उत्पादकता पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थों की`जमंकल आपूर्ति प्रदान कर सकती है, जिससे कुपोषण और संबंधित स्वास्थ्य समस्याओं में कमी आ सकती है। संक्षेप में, ब्लॉक नारायणपुर की कृषि प्रथाओं का ग्रामीण विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है। सतत कृषि प्रथाओं को अपनाकर, भूमि उपयोग पैटर्न में सुधार, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार और नए रोजगार के अवसरों का निर्माण करके कृषि उत्पादकता को बढ़ाना आवश्यक है ताकि सामाजिक–आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा दिया जा सके और क्षेत्र में जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सके। कृषि क्षेत्र से संबंधित चुनौतियों का समाधान करना न केवल आर्थिक परिणामों को बढ़ावा देगा, बल्कि ब्लॉक नारायणपुर के ग्रामीण समुदायों की सामाजिक और पर्यावरणीय स्थिरता में भी योगदान देगा।

अध्ययन के उद्देश्य

- ब्लॉक नारायणपुर में कृषि प्रथाओं के स्थानिक वितरण का विश्लेषण करना।
- कृषि उत्पादकता और ग्रामीण विकास संकेतकों के बीच संबंध का परीक्षण करना।
- किसानों के कृषि स्थिरता, उत्पादकता और आर्थिक लाभ के बारे में दृष्टिकोण का मूल्यांकन करना।
- सतत प्रथाओं के माध्यम से कृषि कार्यक्षमता को बढ़ाने के लिए सिफारिशें प्रदान करना।

अनुसंधान क्रियाविधि

यह शोध डेटा संग्रह के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग करता है, जिसमें ब्लॉक नारायणपुर के 300 उत्तरदाताओं का एक नमूना आकार शामिल है, जिसमें किसान, कृषि श्रमिक और कृषि व्यवसाय मालिक शामिल हैं। स्ट्रैटीफाइड रैंडम सैम्पलिंग का उपयोग किया गया है ताकि नमूना ब्लॉक के विभिन्न गांवों का प्रतिनिधित्व कर सके, जो विविध कृषि प्रथाओं और सामाजिक–आर्थिक स्थितियों को कवर करता है। एक संरचित प्रश्नावली तैयार की गई है ताकि कृषि प्रथाओं के प्रमुख पहलुओं पर डेटा एकत्र किया जा सके। इसमें उगाए जाने वाले फसलों के प्रकार, अपनाई गई कृषि तकनीकों, सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता और प्रभावशीलता, तथा उर्वरकों, कीटनाशकों और जैविक कृषि पद्धतियों का उपयोग शामिल है। सर्वेक्षण में उत्तरदाताओं द्वारा सामना की जा रही चुनौतियों को भी संबोधित किया गया है, जैसे उत्पादन, भंडारण और विपणन में समस्याएं, साथ ही आर्थिक स्थितियां और कृषि आय का ग्रामीण परिवारों की आजीविका पर प्रभाव। डेटा संग्रह उनके संबंधित गांवों में उत्तरदाताओं के साथ आमने–सामने साक्षात्कार के माध्यम से किया जाएगा, जिनके पास डिजिटल उपकरणों तक पहुंच है, उनके लिए मोबाइल–आधारित सर्वेक्षणों द्वारा इसे पूरक किया जाएगा। यह मिश्रित मोड दृष्टिकोण व्यापक डेटा संग्रह सुनिश्चित करने का उद्देश्य रखता है, जबकि उत्तरदाताओं की विविध पहुँच को ध्यान में रखते हुए।

डेटा विश्लेषण

फसल पैटर्न

तालिका 1 आपके क्षेत्र में उगाई जाने वाली फसलों की विविधता

कथन	संख्या	प्रतिशत
दृढ़तापूर्वक असहमत	12	4.0
असहमत	50	16.7
तटस्थ	60	20.0
सहमत	88	29.3
दृढ़तापूर्वक सहमत	90	30.0
कुल	**300**	**100.0**

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

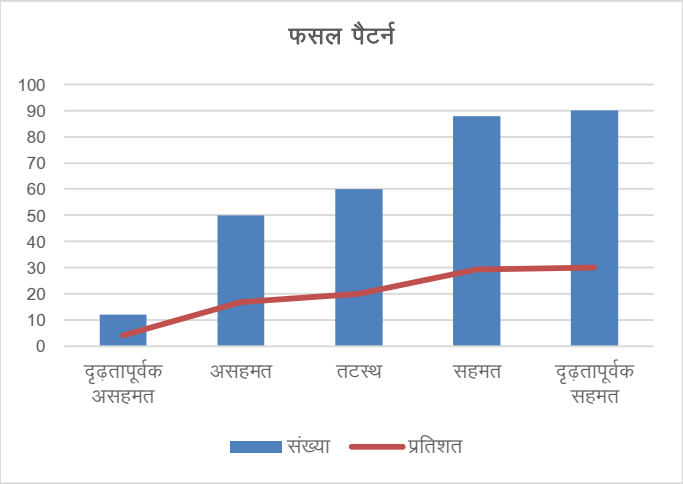

आकृति 1 आपके क्षेत्र में उगाई जाने वाली फसलों की विविधता

तालिका 1 में प्रस्तुत परिणाम उत्तरदाताओं की धान्य विविधता के बारे में धारणाओं को दर्शाते हैं। उत्तरदाताओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा (30.0:) ने यह दृढ़ता से सहमति जताई कि उनके क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं, जबकि 29. 3: ने इस कथन से सहमति व्यक्त की, जो फसल विविधता के बारे में सामान्य सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है। हालांकि, 20.0: उत्तरदाता तटस्थ थे, यह दर्शाते हुए कि उन्होंने फसल विविधता के विचार का न तो समर्थन किया और न ही विरोध किया। दूसरी ओर, 16.7: ने असहमति व्यक्त की, और 4.0: ने दृढ़ असहमति जताई, जो यह दर्शाता है कि कुछ लोग मानते हैं कि क्षेत्र में फसल विविधता सीमित है। ये आंकड़े सुझाव देते हैं कि जबकि अधिकांश उत्तरदाता विभिन्न प्रकार की फसलें उगाई जाने का अनुभव करते हैं, फिर भी कुछ लोग महसूस करते हैं कि क्षेत्र में कृषि विविधता को बढ़ाया जा सकता।

सिंचाई तक पहुंच

तालिका 2 फसल उत्पादन के लिए वर्षा आधारित कृषि की तुलना में सरकारी सिंचाई योजनाएं

कथन	***संख्या***	***प्रतिशत***
वर्षा आधारित कृषि पर पूरी तरह निर्भर	*20*	*6.7*
वर्षा आधारित कृषि पर अधिक निर्भर	*55*	*18.3*
तटस्थ	*55*	*18.3*
सरकारी सिंचाई पर अधिक निर्भर	*70*	*23.3*
सरकारी सिंचाई पर पूरी तरह निर्भर	*100*	*33.3*
कुल	***300***	***100.0***

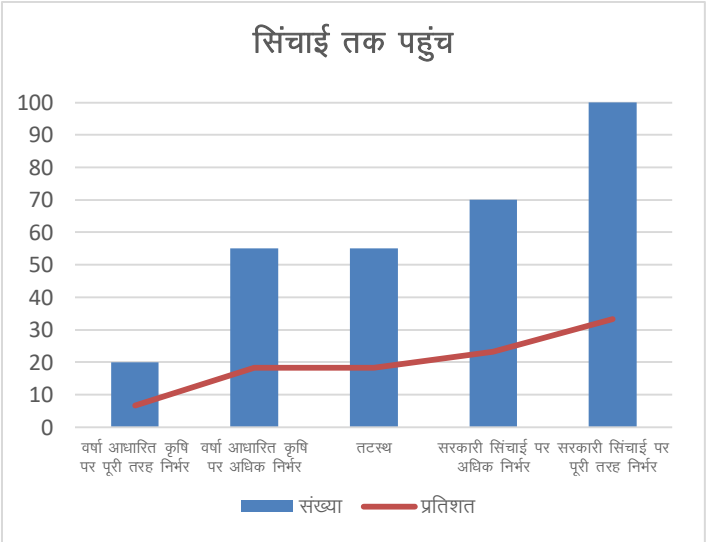

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

आकृति 2 फसल उत्पादन के लिए वर्षा आधारित कृषि की तुलना में सरकारी सिंचाई योजनाएं

तालिका 2 में प्रस्तुत निष्कर्ष उत्तरदाताओं की सिंचाई योजनाओं पर फसल उत्पादन के लिए वर्षा आधारित कृषि की तुलना में निर्भरता को उजागर करते हैं। उत्तरदाताओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा (33.3:) सरकारी सिंचाई योजनाओं पर दृढ़ निर्भर है, जबकि 23.3: सरकारी सिंचाई पर अधिक निर्भर हैं, जो कृषि गतिविधियों के लिए औपचारिक सिंचाई प्रणालियों पर एक महत्वपूर्ण निर्भरता को दर्शाता है। इसके विपरीत, 6.7: उत्तरदाता वर्षा आधारित कृषि पर दृढ़ निर्भर हैं, और 18.3: वर्षा आधारित विधियों पर अधिक निर्भर हैं, जो यह दर्शाता है कि कम प्रतिशत किसान प्राकृतिक वर्षा पर सिंचाई के लिए निर्भर हैं। शेष 18.3: उत्तरदाता तटस्थ थे, जो दोनों विधियों के बीच कोई स्पष्ट प्राथमिकता या निर्भरता नहीं दिखाते हैं। यह डेटा यह दर्शाता है कि किसानों में सरकारी सिंचाई योजनाओं को वर्षा आधारित कृषि पर प्राथमिकता देने की सामान्य प्रवृत्ति है, जो शायद सिंचाई प्रणालियों द्वारा प्रदान की गई उच्च विश्वसनीयता और नियंत्रण के कारण है, हालांकि वर्षा आधारित विधियाँ क्षेत्र में अभी भी महत्वपूर्ण बनी हुई हैं।

आधुनिक तकनीकों का उपयोग

तालिका 3 आधुनिक कृषि तकनीकें जैसे संकर बीज, जैविक खेती, या कृषि पद्धतियों में मशीनीकरण

कथन	संख्या	प्रतिशत
कभी नहीं	3	1.0
शायद ही कभी	55	18.3
कभी–कभी	80	26.7
अक्सर	60	20.0
हमेशा	102	34.0
कुल	**300**	**100.0**

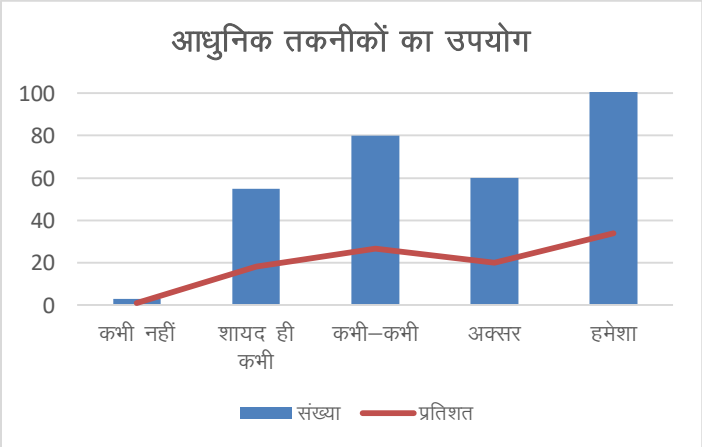

आकृति 3 आधुनिक कृषि तकनीकें जैसे संकर बीज, जैविक खेती, या कृषि पद्धतियों में मशीनीकरण

तालिका 3 में प्रस्तुत डेटा यह दर्शाता है कि क्षेत्र में उत्तरदाताओं द्वारा आधुनिक कृषि तकनीकों जैसे हाइब्रिड बीजों, जैविक कृषि और यांत्रिकीकरण का कितनी हद तक उपयोग किया जाता है। उत्तरदाताओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा (34.0:) ने बताया कि वे हमेशा आधुनिक कृषि तकनीकों का उपयोग करते हैं, जो कृषि में नवाचार और प्रौद्योगिकी के लिए मजबूत प्राथमिकता को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, 20.0: उत्तरदाता इन तकनीकों का अक्सर उपयोग करते हैं, जबकि 26.7: कभी–कभी इनका उपयोग करते हैं, जो किसानों के बीच इन तकनीकों के उपयोग का मध्यम स्तर दर्शाता है। एक छोटा प्रतिशत उत्तरदाता (18.3:) ने कहा कि वे आधुनिक कृषि तकनीकों का शायद ही कभी उपयोग करते हैं, और केवल 1.0: उत्तरदाताओं ने यह संकेत दिया कि वे कभी इन तकनीकों का उपयोग नहीं करते। यह सुझाव देता है कि जबकि आधुनिक कृषि पद्धतियों का व्यापक रूप से अपनाया जा रहा है, फिर भी कुछ किसान ऐसे हैं जिनके पास इन विधियों का सीमित पहुंच या प्राथमिकता है। कुल मिलाकर, परिणाम यह दिखाते हैं कि क्षेत्र में उत्पादकता और स्थिरता में सुधार के लिए उन्नत कृषि तकनीकों के उपयोग की ओर एक बढ़ती प्रवृत्ति है।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

आर्थिक प्रभाव

तालिका 4 कृषि आय ने समग्र जीवन स्तर में सुधार किया है

कथन	संख्या	प्रतिशत
दृढ़तापूर्वक असहमत	35	11.7
असहमत	20	6.7
तटस्थ	84	28.0
सहमत	40	13.3
दृढ़तापूर्वक सहमत	121	40.3
कुल	**300**	**100.0**

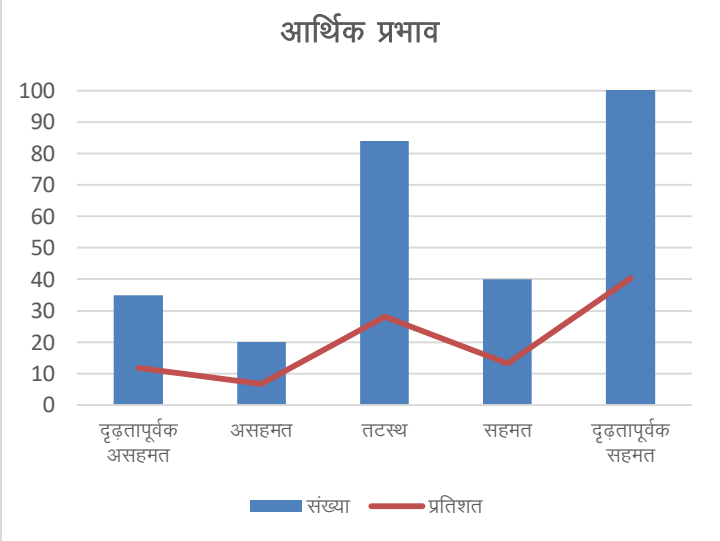

आकृति 4 कृषि आय ने समग्र जीवन स्तर में सुधार किया है।

तालिका 4 में प्रस्तुत परिणाम यह दर्शाते हैं कि उत्तरदाता कृषि आय के उनके समग्र जीवन स्तर पर प्रभाव के बारे में क्या सोचते हैं। एक महत्वपूर्ण बहुमत, 40.3:, ने इस पर जोर दिया कि कृषि आय ने उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाया है, जो यह दर्शाता है कि बहुतों के लिए कृषि उनके आर्थिक कल्याण में सकारात्मक योगदान करती है। इसके अतिरिक्त, 13.3: ने सहमति व्यक्त की, जिससे यह और स्पष्ट होता है कि कृषि आय का आजीविका पर सकारात्मक प्रभाव है। हालांकि, एक महत्वपूर्ण हिस्सा, 28.0:, तटस्थ रहा, जो यह दर्शाता है कि कुछ लोगों के लिए कृषि आय का उनके जीवन स्तर पर प्रभाव न तो महत्वपूर्ण है और न ही नगण्य। दूसरी ओर, 6.7: ने असहमत होते हुए, और 11.7: ने पूरी तरह से असहमत होते हुए यह संकेत दिया कि कृषि आय ने उनके जीवन की स्थिति में सुधार करने में कोई योगदान नहीं किया। कुल मिलाकर, डेटा यह सुझाव देता है कि जबकि कृषि आय कई उत्तरदाताओं के जीवन स्तर में सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, इसके प्रभाव को लेकर जनसंख्या में पर्याप्त भिन्नताएँ हैं।

निष्कर्ष

यह अध्ययन ब्लॉक नारायणपुर में ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने में कृषि प्रथाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। यह दर्शाता है कि जबकि हाइब्रिड बीजों, जैविक खेती और यांत्रिकीकरण जैसी आधुनिक कृषि तकनीकों ने उत्पादकता और दक्षता पर सकारात्मक प्रभाव डाला है, फिर भी कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। पर्याप्त सिंचाई सुविधाओं तक सीमित पहुँच और वर्षा आधारित कृषि पर निर्भरता कृषि विकास में बाधा उत्पन्न करती है, जिससे किसान जलवायु परिवर्तनों के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं। इसके अलावा, अपर्याप्त बाजार पहुंच किसानों को उनके उत्पादों का पूरा लाभ उठाने से रोकती है, जिससे उनकी आय स्तर और समग्र आर्थिक स्थिरता प्रभावित होती है। हालांकि, निष्कर्षों में सुधार के अवसर भी देखे गए हैं। ळै–आधारित योजना का एकीकरण कृषि उत्पादकता में स्थानिक भिन्नताओं का मानचित्रण करने के लिए एक आशाजनक समाधान प्रदान करता है, जिससे बेहतर लक्षित हस्तक्षेप और संसाधन आवंटन संभव होता है। सिंचाई, फसल प्रबंधन और बाजार कनेक्टिविटी को अनुकूलित करने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर इस क्षेत्र में कृषि स्थिरता को बढ़ाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, ऐसे किसान–केंद्रित नीतियों को अपनाना जो बुनियादी ढांचे और वित्तीय बाधाओं दोनों को संबोधित करें, यह सुनिश्चित कर सकता है कि ग्रामीण समुदायों को सतत कृषि प्रथाओं से लाभ हो। अंत में, जबकि आधुनिक प्रथाओं के माध्यम से कृषि

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

उत्पादकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं, यह आवश्यक है कि सिंचाई, बाजार की पहुंच और संसाधन प्रबंधन की चल रही चुनौतियों का समाधान किया जाए। सही नीति हस्तक्षेप और तकनीकी उपकरणों के प्रभावी उपयोग के साथ, ब्लॉक नारायणपुर एक अधिक लचीला और समृद्ध कृषि क्षेत्र बना सकता है, जो अपनी ग्रामीण समुदायों के लिए दीर्घकालिक आर्थिक और सामाजिक प्रगति को बढ़ावा देगा।

संदर्भ

1. मिश्रा, जी. के. (2019). ब्लॉक स्तर की योजना में कृषि विकास का प्रशासन. 'भारतीय लोक प्रशासन पत्रिका, 34'(4), 1005–1019।
2. लाल, पी., बादल, पी. एस., – कुमार, एस. (2017). मिर्जापुर जिले में सामुदायिक आधारित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन का कृषि स्थिरता और आजीविका सुरक्षा पर प्रभाव. 'फार्माकोग्नोसी और फाइटोकेमिस्ट्री पत्रिका, 6'(6), 123–125।
3. साइकिया, बी. (2022). असम में ग्रामीण आजीविका विकल्प और इससे संबंधित समस्याएँ. 'वैश्विक प्रबंधन शोध पत्रिका, 12'(1), 34।
4. हिलोइधारी, एम., – बरुआ, डी. सी. (2011). चावल के तिनके अवशेष बायोमास का विकेन्द्रीकृत बिजली उत्पादन के लिए संभाव्यतारू असम के लखीमपुर जिले में एक जीआईएस–आधारित अध्ययन. 'सतत विकास के लिए ऊर्जा, 15'(3), 214–222।
5. मधुरी, एम., तिवारी, एच. आर., – भौमिक, पी. के. (2014). आजीविका संवेदनशीलता सूचकांक विश्लेषणरू बिहार के संदर्भ में संवेदनशीलता का अध्ययन करने के लिए एक दृष्टिकोण. 'जांबारू आपदा जोखिम अध्ययन पत्रिका, 6'(1), 13।
6. सिंह, सी. वी., रंजन, आर., शेखर, एस., सिंह, ए. के., जैस्वाल, ए. के., – पान, आर. एस. (2018). झारखंड के संथाल परगना क्षेत्र के किसानों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति और दृष्टिकोणरू एक बेंचमार्क विश्लेषण. 'एशियाई कृषि विस्तार, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र पत्रिका, 22'(2), 1–6।
7. दुबे, पी. के., सिंह, ए., चौरसिया, आर., पांडे, के. के., बुंदेला, ए. के., सिंह, जी. एस., – अभिलाश, पी. सी. (2022). पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्थिर चावल–गेहूं उत्पादन और मृदा उर्वरता सुधार के लिए पशु खाद और पौधों के अवशेष आधारित संशोधन. 'इकोलॉजिकल इंजीनियरिंग, 177', 106551।
8. मजुमदार, एस., दास, ए., – मंडल, एस. (2023). पश्चिम बंगाल के मंदपाचक ब्लॉक में नदी किनारे कटाव और स्थानीय जनसंख्या की आजीविका संवेदनशीलता. 'पर्यावरण, विकास और स्थिरता, 25'(1), 138–175।
9. सेंगर, आर. एस., सिंह, बी. बी., भारद्वाज, एन., – सिंह, ए. के. (2008). छत्तीसगढ़ के आदिवासियों में एनडब्ल्यूडीपीआरए का फसल उत्पादन पर प्रभाव. 'भारतीय अनुसंधान पत्रिका, 8'(1), 54–56।
10. दुबे, पी. के., सिंह, जी. एस., अभिलाश, पी. सी., दुबे, पी. के., सिंह, जी. एस., – अभिलाश, पी. सी. (2020). पूर्वी उत्तर प्रदेश में अपनाई गई कृषि प्रथाएँ. 'अनुकूली कृषि प्रथाएँरू बदलते जलवायु में लचीलापन निर्माण' में (पृ. 93–122)।
11. दत्ता, एस. (2018). सिंचाई और कृषि विस्तार के कारण–प्रभाव विश्लेषणरू पश्चिम बंगाल के बर्धमान जिले के अजय–दमोदर इंटरफ्लूव के कंक्सा ब्लॉक का एक अध्ययन. 'सतत जल संसाधन प्रबंधन, 4', 469–487।
12. कुमार, एस., – कुमार, आर. (2014). गोभी उगाने वालों द्वारा उपयोग किए गए विभिन्न सूचना स्रोतों का विस्तार. 'भारतीय सामाजिक अनुसंधान पत्रिका, 55'(5), 745–750।